

**क्या** हमारे प्राचीन पूर्वज विज्ञान और तन्त्रज्ञान में अतिप्रगत थे? ये प्रश्न मुझे एक वैज्ञानिक के नाते पूछा जाता है। वास्तविक रूप से इस प्रश्न का समाधानकारक उत्तर देने लायक जानकारी मेरे पास नहीं है। परंतु अपने संशोधन की सीमा से परे जाकर किसी भी विषय पर टिप्पणी करें ऐसी (ग़लत) अपेक्षा तज्ञ लोगों से की जाती है। ऐसी अपेक्षाएं पूरी करने वाले अनेक तज्ञ उपलब्ध भी होते हैं। मैं ऐसे तज्ञों में से नहीं हूँ। परंतु ये विषय विज्ञान से संबंधित होने के कारण प्रश्न के उत्तर खोजने के लिए जिस प्रकार के वैज्ञानिक सबूत होना आवश्यक है, वो किस प्रकार की कसौटी पर कसे जायें इसकी चर्चा हेतु ये लेख लिखने का साहस कर रहा हूँ।

## "पुराणों में विज्ञान" - कसौटी क्या हो?

डॉ जयन्त विष्णू नारळीकर

उपरोक्त प्रश्न पूछने के पीछे मूल कारण क्या है? अपने पौराणिक ग्रंथों में जो संदर्भ प्राप्त होते हैं उससे प्रथम दृष्टि में तो वाचकों का यही मत बनता है कि यह वर्णन एक विज्ञान-तंत्रज्ञान में प्रगत संस्कृति की है। इसके कुछ उदाहरण हैं।

रामायण में पुष्कर विमान का वर्णन है। ये आधुनिक हेलिकॉप्टर का ही रूप नहीं है क्या? कर्ण ने घटोत्कच के पीछे जो 'इंद्रशक्ति' छोड़ी थी उसमें और आज के गायडेड मिसाइल में क्या अंतर है? महाभारत में धृतराष्ट्र को युद्ध का आंखों देखा हाल दूर से सुनाने वाला संजय आज के कमेन्ट्री करने वाले टीवी जैसा ही ही तो है। अंतरिक्ष में मुक्त संचार करने वाले देवताओं और गंधर्वों के पास स्पेस टेक्नॉलाजी थी ये कहने में क्या हर्ज है। 'कवीनां उशना कविः' ऐसे शुक्राचार्य मेडिसिन और सर्जरी में आधुनिक ज्ञान से भी आगे नहीं थे क्या?

ये तो हुए प्रगत तंत्रज्ञान के उदाहरण। अब मूलभूत विज्ञान, गणित आदि के नमूने देखें। वृत्त की परिधि और व्यास इनका अनुपात लगभग २२/७ होता है। इस अनुपात को ग्रीक अक्षर 'पाय' से प्रदर्शित किया जाता है। आधुनिक गणित में 'पाय' को 'ट्रान्सेन्डेन्टल इररेशनल' कहते हैं और वो संख्या यदि दशांश पद्धति के अनुसार दर्शायी गई तो उन आंकड़ों में आवर्तन या किसी भी प्रकार की नियमितता नहीं होती। इस संख्या को दशांश से बहुत आगे तक पुरातन भारतीय गणित में दर्शाया गया है।

आइन्स्टाइन के प्रसिद्ध रिलेटिविटी के सिद्धांत के अनुसार

कालक्रमण का वेग निरीक्षक पर निर्भर करता है। इस सिद्धांत का निरूपण हमें प्राचीन आख्यायिका में मिलता है। रेवत नामके राजा का पुत्र कुकुदमी अपनी कन्या रेवती को लेकर ब्रह्मदेव के पास गये क्योंकि कन्या के वरसंधान हेतु ब्रह्मदेव की सलाह चाहिए। ब्रह्माजी काम में मग्न थे इसलिए कुछ क्षण रुकना पड़ा। जब ब्रह्माजी से भेंट हुई तो उनका आने का उद्देश्य सुनकर ब्रह्माजी हंस पड़े। आपने जिन युवकों के बारे में विचार किया है वे तो कब के काल कवलित हो चुके हैं। यहां के कुछ क्षणों का अर्थ है पृथ्वी के

चारों युगों का सत्ताइस बार उलटफेर होना। (चार युगों का कालखण्ड कितना बड़ा ये लेख के अंत में स्पष्ट किया है)।

'क्वांटम थियरी' इस बीसवीं सदी के महत्वपूर्ण सिद्धांत के प्रतिविम्ब पौराणिक और वैदिक साहित्य में दिखते हैं। इस सिद्धांत के आधार में 'अनसर्टेन्टी प्रिन्सिपल' प्रकाश के रूप में वेवपार्टिकल ड्यूएलिटी एटमिक थियरी आदि कल्पनायें पुरातन पूर्वजों द्वारा व्यक्त किये गये विचारों में झांकती है।

(विज्ञान और तंत्रज्ञान से संबंधित परिभाषिक शब्द जानबूझकर अंग्रेजी में प्रयोग किये हैं। जिससे पाश्चात्य कल्पनाओं की जड़ें अपने पौराणिक साहित्य में थी ये दावा अधिक सुदृढ़ होगा)

आज का और भविष्य में संशोधित होने वाला विज्ञान और तंत्रज्ञान हमारे पूर्वजों को पहले से परिचित था। इस तरह का दावा यदि कोई न्यायालय में करेगा और उपरोक्त दावों को प्रस्तुत करेगा, फ्रिटज़ॉफ काप्रा जैसे पाश्चात्य लेखकों के उद्धरणों का संदर्भ देगा तो कुशल वकील की मदद से दावा जीत भी लेगा। क्योंकि पाश्चात्य समर्थन को हम लोग काफी कीमत देते हैं। परंतु न्यायालय में स्वीकार्य दावे और वस्तुस्थिति में काफी अंतर होता है। जैसा कि पहले कहा है, वास्तविक वस्तुस्थिति जानने के लिए वैज्ञानिक कसौटी ही लगानी पड़ेगी।

जिज्ञासा, प्रयोग, निरीक्षण, कारणमिमांसा और निष्कर्ष इन पांच कड़ियों की श्रृंखला के माध्यम से विज्ञान गतिमान होता है। प्रकृति में होने वाले परिवर्तन और प्रयोगशाला में किये गये प्रयोगों की कारणमिमांसा करने के लिए वैज्ञानिक सिद्धांत अस्तित्व में आते हैं। ये सिद्धांत मनुष्य के मस्तिष्क से बाहर आते हैं और उनका भविष्य उनके सफल निष्कर्ष करने के सामर्थ्य पर निर्भर करता है। ये निष्कर्ष प्रयोग और

निरीक्षण द्वारा जांचे जाते हैं। इनकी परिपूर्णता मानवी जिज्ञासा को शमन करने में दिखाई देती है। ये श्रृंखला निरंतर गतिमान रखने के लिए एक अनुशासन की आवश्यकता होती जो इस प्रकार है:

कोई भी सिद्धांत सर्वार्थ में परिपूर्ण नहीं होता। उसमें सुधार होता रहता है और सुधार होते रहना ये वैज्ञानिक प्रगति का लक्षण है। इसलिए कितना भी प्रतिष्ठित वैज्ञानिक हो उसके सिद्धांत का भविष्य उसके निष्कर्ष सही साबित होते हैं या नहीं इस पर निर्भर करता है। अर्थात् जैसे जैसे प्रयोग और निरीक्षण करने के उपकरण अधिक से अधिक कार्यक्षम होते जाते हैं वैसे वैसे इन निष्कर्ष को सिद्ध करने की जिम्मेदारी वैज्ञानिक सिद्धांतों की होती है। इसी कारण से अनेक वर्षों तक ग्राह्य माना गया न्यूटन या गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत, आइन्स्टाइन के सिद्धांत के सामने निष्प्रभ साबित हुआ। हो सकता है भविष्य में आइन्स्टाइन का सिद्धांत उससे भी श्रेष्ठ सिद्धांत के आगे टिक नहीं पाये।

सिद्धांत की तरह प्रयोग में भी विज्ञान व्यक्तिनिष्ठ नहीं होता। वैज्ञानिक प्रयोगों की पुनरावृत्ति की जा सकती है। केवल एक व्यक्ति ही प्रयोग विशेष को कर सकता है ऐसा नहीं है। प्रयोग किस प्रकार करना है इसकी जानकारी अगर उपलब्ध है तो उसके अनुसार वह प्रयोग कोई भी कर सके इस प्रकार का होना चाहिए। दूसरे महायुद्ध के समय दुनिया के श्रेष्ठ वैज्ञानिकों ने एकत्र होकर मेनहट्टन प्रकल्प में से अणु स्फोट संभव कर दिखाया। इस प्रकार का आणविक विस्फोट यदि प्रयोग की जानकारी और साधन उपलब्ध हों तो कोई भी वैज्ञानिक इसे कर सकता है। उसी प्रकार अचूक निष्कर्ष प्रतिपादित करने के लिए सृष्टि गणितीय आधार पर रहे हों और प्रयोग हेतु साधन सामग्री भी ऊंचे दर्जे की होनी चाहिए साथ ही प्रयोग के संबंध में निश्चित नापतौल की जानकारी भी देनी चाहिए।

सिद्धांत के पीछे का आधारभूत गणित, प्रयोग के लिए लगने वाली आवश्यक सामग्री और कार्यप्रणाली के वर्णन के आधार पर ही यह तय किया जा सकता है कि उस काल का विज्ञान कितना प्रगत था। उदाहरणार्थ गैलेलियो की पुस्तक 'विश्व रचना के दो सिद्धांतों पर वार्तालाप' कोपरनिकस की पुस्तक 'आकाशीय पिन्डों के परिभ्रमण कक्ष' से अधिक प्रगत विज्ञान प्रदर्शित करती है। न्यूटन की पुस्तक 'वैज्ञानिक नैसर्गिक तत्वज्ञान का गणितीय ढांचा' गैलेलियो से अधिक ऊंची सीढ़ी पर है। जो व्यक्ति गैलेलियो, कोपरनिकस और न्यूटन को नहीं जानता वह भी इन ग्रन्थों के अध्ययन से यही निष्कर्ष निकालेगा क्योंकि यह निष्कर्ष व्यक्तिनिष्ठ नहीं वस्तुनिष्ठ है। (अमुक वकील होता तो दावा शायद जीत जाते यह भाव यहां नहीं है)।

इन तीनों ग्रन्थों की तुलना क्यों संभव है? इसलिए कि ये तीनों वैज्ञानिक ग्रन्थ हैं इनको वैज्ञानिक कसौटी पर कसा जा सकता है। कोपरनिकस ने केवल 'पृथ्वी और अन्य सभी ग्रह सूरज के चारों तरफ घूमते हैं' ऐसा सरल वक्तव्य मात्र नहीं दिया। उसने अनेक ग्रहों की कक्षा निर्धारण हेतु भूमितीय रचनाओं को विस्तार से समझाया। गैलेलियो ने उपलब्ध तंत्रज्ञान का उपयोग करके यथासंभव प्रयोग करके दिखाये। न्यूटन ने तो प्रायोगिक और सैद्धांतिक दोनों शाखाओं की विस्तार से चर्चा करके उसके लिए नवीन गणित का निर्माण किया। वैज्ञानिक प्रगति के प्रतिबिम्ब तकनीक में परिलक्षित होते हैं। मैक्सवेल ने विद्युत चुम्बकीय तरंगों का अस्तित्व समीकरण बना के सिद्ध किया। हर्टज ने प्रयोगशाला में इन तरंगों का अस्तित्व सिद्ध किया। मार्कोनी ने इन तरंगों का उपयोग रेडियोसेट बनाने में किया।

क्या रेडियो का विज्ञापन पढ़कर कोई रेडियो बना सकता है? नहीं। रेडियो खरीदने के बाद उसके साथ मिलने वाले जानकारी पत्रक के अनुसार क्या रेडियो बनाया जा सकता है नहीं परंतु अंदर की मशीनरी की विस्तार से जानकारी देने वाली सामग्री अगर मिल गई तो उसके माध्यम से पुर्जों को जोड़कर रेडियो बनाया जा सकता है।

मानिये किसी पुरातन संस्कृति के अवशेष से उपरोक्त तीनों प्रकार की जानकारी प्राप्त हो गई तो उस संस्कृति की वैज्ञानिक उपलब्धि के बारे में क्या बताया जा सकता है। प्रथम दो प्रकार की जानकारी में बहुत हुआ तो कहा जा सकता है कि उस संस्कृति को रेडियो सेट बनाने की जानकारी थी इसके प्राथमिक सबूत प्राप्त हैं। फिर भी तीसरे प्रकार की विस्तारित जानकारी ही तकनीक की ठोस गवाही हो सकती है। यही वैज्ञानिक कसौटी होगी।

संक्षेप में कहें तो पुरातन काल में विज्ञान और तकनीक अत्यंत विकसित थीं यह निर्विवाद रूप से सत्यापित करना हो तो उपरोक्त उदाहरणों के अनुसार वैज्ञानिक सांचे में ढलने योग्य जानकारी होना अनिवार्य है। इस कसौटी को ध्यान रखकर पुनर्विचार करते हैं। लेख के आरंभ में वर्णित प्राथमिक सबूत के नाम पर, वैज्ञानिक कसौटी पर कसी जा सकने वाली कोई भी वास्तविक जानकारी मेरी नजर में नहीं आयी है। 'वृहद विमान शास्त्र' नामक एक पुराना ग्रंथ मेरे पढ़ने में आया अवश्य है परंतु वह मेरी अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरा। अपेक्षाएँ दो प्रकार की थीं।

पहली अपेक्षा थी कि 'विमानशास्त्र' अर्थात् विमान हवा में क्यों उड़ते हैं इसका सैद्धांतिक विवेचन अर्थात् एयरोडायनेमिक्स का वर्णन होना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि एक विशिष्ट आकार की वस्तु

के चारों तरफ वायु जोर से चल रही हो तो उसकी वजह से वस्तु हवा में उठ सकती है। इसके पीछे का सिद्धांत और हवा में विमान किस प्रकार उड़ता है इसका विवेचन करने वाली स्कूली बच्चों को समझ में आने लायक पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं अर्थात् गणितीय आधार न देकर भी सिद्धांत का मूलतत्त्व समझाया जा सकता है। परंतु ऐसी कोई सामग्री मुझे उस पुस्तक में प्राप्त नहीं हुई।

दूसरी अपेक्षा थी कि ग्रन्थ में हवाई जहाज कैसे बनाया जाय इसका सिलसिलेवार वर्णन (मेन्युअल के अनुसार) मिलना चाहिए। परंतु उसका वर्णन पढ़कर कोई आधुनिक तन्त्रज्ञ हवाई जहाज नहीं बना सकता।

गलतफहमी न हो इसलिए फिर से स्पष्ट कर दूं ये दोनों अपेक्षाएं मेरी स्वयं की (यानि जयन्त नारलीकर व्यक्ति की) है ऐसा नहीं। वैज्ञानिक कसौटी पर कसने के लिए कोई भी वैज्ञानिक यही अपेक्षा करेगा। मैं स्वीकार करता हूं कि यह संभव है कि मैं उस पुस्तक का सही आंकलन न कर पाया हूं। यदि कोई आंकलन कर पाये और उसकी उपरोक्त दोनों अपेक्षाएँ पूरी हो या कम से कम एक पूरी हो तो ये माना जासकेगा कि हमारे पूर्वजों को हवाई जहाज बनाना आता था।

ब्रह्माजी वाली आख्यायिका से साक्षेपवाद सिद्धांत की निरीक्षण पर निर्भर कालक्रमण की गति अपेक्षित है क्या? नहीं। क्योंकि उस कथा में गणितीय विवेचन नहीं है। कृष्णविवर के प्रचण्ड गुरुत्वाकर्षण के कारण काल की गति मंद होती है। इस कारण ब्रह्मदेव की कृष्णविवर से तुलना वैज्ञानिक कसौटी सही नहीं बैठती। क्योंकि कृष्ण विवर के और गुणधर्म इस आख्यायिका में वर्णित नहीं है क्वान्टम थियरी की कल्पनाओं से भारतीय दर्शन की समानता केवल सतही मात्र है। क्वान्टम थियरी की कल्पनाओं को गणित की भाषा में समझाया जा सकता है। तथा निष्कर्ष प्रयोग द्वारा सिद्ध किये जा सकते हैं। क्या ऐसी कोई भी कल्पना पुराणों में रची है जो प्रयोगों के द्वारा जांची जा सके?

'पाय' का उदाहरण भी निराशाजनक ही है। पाय की सही मान जानने के लिए त्रिकोणमिति के सूत्र व विकलन शास्त्र की जानकारी आवश्यक है। ऐसी कोई जानकारी पुरातन साहित्य में नहीं मिलती। उसी प्रकार 'पाय' की सही कीमत पहले से ज्ञात थी तो गणित की अन्य प्रमेयों का अस्तित्व भी होना चाहिए। कम से कम मेरी नजर में तो प्रमेयों संबंधी कोई वर्णन नहीं आया।

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि प्राथमिक सबूत के अलावा वैज्ञानिक कसौटी पर कसे जाने लायक कोई सबूत पुराणों में नहीं

मिले है। इसके कुछ अपवाद हैं। उदाहरण चरक संहिता और सुश्रुत संहिता इनके वर्णनों में वैद्यक शास्त्र के विचार से जानकारी मिलती है। रोग के लक्षण उसके उपाय, शस्त्रक्रियाओं का वर्णन यद्यपि आधुनिक पाश्चात्य शास्त्र से मेल नहीं खाता फिर भी वे स्पष्ट रूप में हैं और उससे वैद्यकीय ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

संस्कृत भाषा ज्यादा लचीली है। इसलिए श्लोकों का अर्थ करते समय वैज्ञानिक कसौटी पर कसते समय दिक्कत आती है। जो भाषा कालिदास भारवी दंडी माघ का साहित्य सुशोभित करती है वो ठोस वैज्ञानिक तथ्य को प्रस्तुत करने में उपयोगी सिद्ध नहीं होती। कई शब्द हैं जिनके अनेक अर्थ हैं। इच्छानुसार किसी भी क्रम में प्रयोग करने की स्वतंत्रता होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। मूल लेखक के टीकाकार बाद में इच्छानुसार अनेक अर्थ बता सकते हैं। 'पार्वतीपरमेश्वरों' लिखतेसमय कालिदास को शंकर पार्वती कहना था या शंकर विष्णु? अर्थ के बदलने से रघुवंश में बहुत अधिक फर्क नहीं पड़ता परंतु विज्ञान में बहुत अंतर पड़ता है। इसका एक रोचक उदाहरण आर्य भट्ट का लिखा श्लोक है आर्यभटीय अध्याय ४ श्लोक ९ जिसमें बताया गया है 'पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। तारामंडल स्थिर है। पृथ्वी के परिवलन के कारण तारे उदय और अस्त होते हैं। ये कथन आज भले ही सही माना जाये लेकिन कोपर्निकस से पहले इसे गलत माना जाता था तब टीकाकारों ने आर्यभट्ट का कथन यह नहीं कुछ और ही था ऐसा प्रतिपादन किया था। और श्लोक का अर्थ कुछ भिन्न ही लगाया।

इस तरह के लचीलेपन के कारण किसी श्लोक या ऋचा का अर्थ लगाते समय टीकाकारों ने पश्चातबुद्धी का कितना उपयोग किया है ये कहना मुश्किल होता है। दीर्घतमस और सूर्य पुस्तक में भैया साहब पन्त ने ऋग्वेद में दीर्घतमा ऋषि ने कुछ ऋचाओं में आधुनिक सूर्यतेज के सिद्धांत का वर्णन किया है। सूर्यतेज के मूल में अणुगर्भों के एकीकरण और उसमें से ऊर्जा उत्पादन का सिद्धांत है। हाइड्रोजन के चार अणु गर्भ बने और उसमें नष्ट होने वाले वस्तुमान ऊर्जा के रूप में बाहर निकलते हैं। यदि ये सारी जानकारी पहले से ही ऋचाओं में है तो इस सिद्धांत के अन्य अनुत्तरित प्रश्नों के उत्तर भी इन ऋचाओं में मिलने चाहिए। एक प्रश्न यह है कि इस प्रक्रिया में न्यूट्रिनो कण बाहर निकलते हैं परंतु जिस मात्रा में बाहर निकलने चाहिए उतने नहीं निकलते। (पृथ्वी पर प्रयोग में यह देखा गया है) सिद्धांत और वास्तव के बीच के इस अंतर का कारण अभी वैज्ञानिकों को ज्ञात नहीं हो सका है। भविष्य में इसका उत्तर निश्चित रूप से मिलेगा परंतु उत्तर मिलने पर वेदशास्त्री कहेंगे कि यही वेद

में लिखा था। परंतु बाद में कहने की बजाय अगर वेदशास्त्री पहले ही घोषणा करें तो अधिक उपयुक्त होगा।

विज्ञान के क्षेत्र में ऐसी परिस्थिति कई बार आ जाती है कि संशोधकों को अनेक परस्पर विरोधी कथनों में से एक को चुनना पड़ता है क्योंकि एक ही उक्ति वास्तविक एवं यथार्थ सत्य होती है। अगर वह सही पर्याय चुनता है तो ये कहा जा सकता है कि वह सफल हो गया लेकिन अगर अनेक पर्याय चुनकर अलग अलग शोध लिखता है तो उसे निष्कर्ष नहीं कहा जा सकता, क्योंकि अनेक पर्यायों में से एक सही निकलेगा यह तो निश्चित होता है। सिक्का फेंकने पर हेड या टेल कुछ एक तो आयेगा ही! ऐसे कथन में निष्कर्ष जैसा कुछ नहीं है। एक और उदाहरण देखिए।

सृष्टी की रचना के संबंध में तीन मतप्रवाह हैं। सर्वाधिक मतों के अनुसार विश्व की उत्पत्ति एक महास्फोट के कारण हुई। कुछ लोगों के मत के अनुसार विश्व अनन्त अनादि है और इसका लगातार प्रसारण हो रहा है। कुछ लोगों के अनुसार विश्व स्पन्दनशील पिन्ड है जो निर्धारित समय में सिकुड़ता और फैलता है। तीनों ही मतों के समर्थन में पुराने शास्त्रों से विद्वानों ने उद्धरण प्रस्तुत किये हैं। इस प्रकार परस्पर विरोधी दावों के कारण उनका वैज्ञानिक महत्व नगण्य हो जाता है।

श्रीमद् भागवत और विष्णु पुराण आदि पौराणिक ग्रंथों में ब्रह्मदेव के एक दिन का मानवी वर्ष में रूपांतरण करने के लिए निम्नलिखित समीकरण दिया है। ब्रह्माजी का एक दिन चार युगों के बराबर होता है अर्थात् एक हजार आवर्तन का काल। चार युगों का आवर्तन काल बारा हजार दिव्य वर्षों के तुल्य होता है। एक दिव्य वर्ष अर्थात् मानव के तीन सौ साठ वर्ष। इसका अर्थ हुआ ब्रह्माजी का एक दिन १०००x१२०००x३६० अर्थात् ४.३२ अरब मानवी वर्ष।

पृथ्वी के आरंभ से अभी तक का समय वैज्ञानिकों ने ४.६ अरब वर्ष आंका है जो ब्रह्मा जी के एक दिन अर्थात् ४.३२ अरब मानवी वर्ष से आश्चर्यजनक रूप से मेल खाता है। इस प्रकार की समानता कैसे संभव हुई? आज के भूभौतिक शास्त्रज्ञ जिन विधियों से पृथ्वी की आयु नापते हैं क्या वे विधियां हमारे पूर्वजों को ज्ञात थीं?

पृथ्वी या सूर्य की आयु ज्ञात करने के लिए वैज्ञानिक आजकल चट्टानों में उपस्थित यूरेनियम और सीसा इनके प्रमाणों में मन्द क्रियाओं के कारण जो परिवर्तन होते हैं उनकी जांचकर यह पता लगाते हैं कि यह परिवर्तन कितने समय में हुआ। इस विधि से उस चट्टान की आयु निकाली जाती है। यूरेनियम आयसोटोप की मात्रा नापकर भी आयु तय की जाती है।

पृथ्वी के उत्तर दक्षिण अक्ष अंतरिक्ष में भ्रमण करते हैं। इस कारण से सम्पात बिन्दू आयनिक वृत्त पर स्थान परिवर्तित करते हैं इस घटना का संबंध ४.३२ अरब वर्ष के कालखण्ड से है, ऐसा निष्कर्ष एस. आर. एन. मूर्ती ने १९८२ के जर्नल ऑफ जिऑलाजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अंक में प्रकाशित लेख में किया है। वराहमिहिर की पुस्तक 'सूर्य सिद्धांत' के गणित के अनुसार आयनिक वृत्त में संपात बिन्दू बहात्तर सौ वर्ष में पूर्व पश्चिम आवर्तन करते हैं। इस प्रकार छः सौ आवर्तन एक महायुग (अर्थात् चार युग का कालखण्ड) पूरा होता है। अतः महायुग का कालखंड ४३.२ लाख होता है। इस प्रकार के एक हजार महायुगों से मिलकर एक ब्रह्मदिन बनता है। मूर्ती का ये कथन यद्यपि सही है तथापि आधुनिक और पुरातन आंकड़ों में दिखने वाली समानता महज संयोग है इसके पीछे वैज्ञानिक आधार नहीं लगता।

हमारे पूर्वज क्या विज्ञान और तन्त्रज्ञान में अति प्रगत थे? इस प्रश्न का हां में उत्तर उपलब्ध तथ्यों के आधार पर मुझसे नहीं दिया जा सकता, क्योंकि लेख में वर्णन किये वैज्ञानिक कसौटी पर ये सबूत मुझे कतई पर्याप्त नहीं लगते। परंतु यह प्रश्न यहां समाप्त नहीं होता। बल्कि नकारात्मकता से सकारात्मक उत्तर देने का आह्वान स्वीकार कर कोई और संशोधन और अधिक सबूत प्राप्त करे यही इस लेख का उद्देश्य है। ●

## QUOTES ABOUT INDIA

Mark Twain said: India is, the cradle of the human race, the birthplace of human speech, the mother of history, the grandmother of legend, and the great grand mother of tradition.